B.A. Part-III   Development Psychology Dr. Uma Choudhary

Date ____ Page No. ____

Social adjustments in old age factors.

वृद्धावस्था में होने वाली शारीरिक और मानसिक दशाओं तथा स्थितियों में परिवर्तन होने के कारण व्यक्ति को सफल समायोजन में अनेक कठिनाइयाँ उत्पन्न होती है। ऐसे अनेक कारक है जिन पर व्यक्ति का कोई नियंत्रण नहीं होता है। परन्तु वे व्यक्ति के समायोजन को सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। इन factors का वर्णन निम्नलिखित इस प्रकार है-

(1) Early experiences (प्रारंभिक अनुभव)

व्यक्ति अपनी प्रौढ़ावस्था एवं मध्यावस्था में जिस प्रकार अपनी परिस्थितियों से समायोजन किये रहता है, उसी प्रकार वृद्धावस्था में भी चाहता है, जबकि वर्तमान परिस्थितियों में यह उपयुक्त नहीं होता। ऐसी परिस्थिति में उसे नये समायोजन करने होते हैं। समायोजन में इस प्रकार की लोचनता (flexibility) लाना वृद्धों के लिए कठिन होता है (Havinghurst 1965, King and Howell 1964) कुछ व्यक्ति अपनी वृद्धावस्था, आर्थिक एवं शारीरिक कमजोरी के कारण संवेगिक तनाव का अनुभव करते हैं। यह प्रतिक्रियाएँ निश्चित रूप से उनके प्रारंभिक समायोजन प्रतिरूप की ओर संकेत करती है, जो वृद्धावस्था की निराशा एवं कुण्ठा का कारण बनती है।

(2) Satisfaction of needs (आवश्यकताओं की संतुष्टि)

अधिक समायोजित व्यक्ति निश्चित रूप से अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि कर लेता है, और दूसरों की प्रत्याशा के अनुसार जीवन यापन करता है। यद्यपि व्यक्ति को भिन्न-2 भूमिकाओं को निभाना पड़ता है और यह भूमिका परिवर्तन बहुत प्रगतिशील एवं सुधारवादी होते हैं, लेकिन यह भूमिकाएँ वृद्धों के स्वास्थ्य एवं वातावरणीय दबावों के कारण आवश्यक होती है। ऐसा न होने पर व्यक्ति कुसमायोजित हो जाता है। (Havighurst, 1965, Henry and Cumming 1959) आर्थिक सुरक्षा, विलम्ब सेवा निवृत्ति एवं रहन-सहन का अच्छा स्तर वृद्धावस्था के समायोजन में सहायक होता है, जबकि आर्थिक असुरक्षा, प्रतिकूल पारिवारिक संबंध, खराब स्वास्थ्य, वृद्धों को घरों में अकेले रहना, परिवार

Date __/__/____ Page No.: ____

के सदस्यों एवं मित्रों से कम सम्पर्क आदि वृद्धावस्था में खराब समायोजन में अपना योगदान प्रदान करते हैं। वृद्धावस्था में व्यक्ति का self concept जितना ही अनुकूल होगा, समायोजन उतना ही अनुकूल होगा। (King and Hawell, 1964)।

(3) <u>Social Attetudes (सामाजिक अभिवृत्तियाँ)</u>

जिन संस्कृतियों में बड़े-बुजुर्गों की भूमिकाएँ स्पष्टतः परिभाषित होती हैं, वहाँ उन संस्कृतियों की तुलना में लोगों को समायोजन करने में आसानी होती है, जहाँ भूमिकाएँ स्पष्टतया परिभाषित नहीं होती हैं (Henry and Cumming, 1959) समस्या उस समय उत्पन्न होती है जब व्यक्ति अपनी बदली हुई भूमिका को स्वीकार नहीं करता है। जब व्यक्ति वृद्धावस्था के संदर्भ में पाई जाने वाली रूढ़ि धारणाओं को स्वीकार कर लेता है तो वह अपनी अभिप्रेरणाओं का गला घोंट देता है जो उसके कुसमायोजन का कारण बनता है।

(4) <u>Personal Attitudes (वैयक्तिक अभिवृत्तियाँ)</u>

वृद्धावस्था में व्यक्ति का समायोजन वृद्धावस्था के बारे में उसके अपने दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। resistant (प्रतिरोधक) अभिवृत्ति समायोजन में महत्वपूर्ण बाधक के रूप में कार्य करती है। व्यक्ति का यह सोचना कि अब वह समाज के लिए अनुपयोगी है, वृद्धावस्था में खराब समायोजन एवं अप्रसन्नता का कारण बनता है (Fiegel, 1955, Marson, 1954) वृद्धावस्था में अपमानित होने पर self concept Damage (क्षतिग्रस्त) होता है। वृद्धावस्था में सभी को ऐसे अपमानों को सहन करना होता है, अंतर केवल मात्रा का होता है। (Havighurst and Albrect, 1953) आकर्षण का सामाजिक मूल्य है। वृद्धावस्था में इसका ह्रास होते देखा गया है, जिससे समायोजन में कठिनाई होती है।

(5) <u>Preparation for old-age (वृद्धावस्था की तैयारी)</u>

Menninger का मत है कि सुखद वृद्धावस्था की नींव बाल्यावस्था में ही पड़ जाती है। वृद्धावस्था में उपर्युक्त समा-योजन के लिए आवश्यक है कि बाल्यावस्था में ही उन्हें

Cultivation of mind should be the ultimate aim of human existence. —B.R.Ambedkar
Chitra

Date ___/___/___ Page No.: ______

यथार्थ का सामना करने एवं उसे स्वीकार करने के लिए ही न प्रशिक्षित किया जाए बल्कि उन्हें सही-गलत में निर्णय करना सिखाया जाए, धैर्य बनाये रखने के लिए कहा जाए, भविष्य में आत्मनिर्भर बनाने को कहा जाए, किसी से कुछ प्रत्याशा न करने के लिए कहा जाए, दूसरों से प्रेमपूर्ण व्यवहार प्रकट करना जाए तथा उन्हें सार्वजनिक रूप से क्रियाशील बनाया जाए (New York Time Report, 1955)। जब यह आधारशिला कमजोर होती है तो व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक स्रोत क्षीण होते हैं, तो समायोजन कम होता है। जिन्होंने अपने को सेवा-निवृत्ति के लिए शारीरिक और मानसिक रूप से तैयार नहीं करते हैं, उन्हें अपने जीवन की अंतिम अवस्था में दुखद अनुभवों का सामना करना पड़ता है। (Fried 1949)।

(6) Method of adjustment (समायोजन की विधि)

वृद्धावस्था में समायोजन की अनेक विधियाँ हैं। कुछ विधियाँ तार्किक हैं जिनसे सफल समायोजन होता है, जबकि अतार्किक विधियों के व्यवहार में कुसमायोजन पाया जाता है। समायोजन की अनेक अतार्किक विधियों में आयु के कारण होने वाले परिवर्तनों का अस्वीकार करना, अपने से छोटों के प्रति असहनशील बनकर क्षतिपूर्ति करना, युवकों में कमियों को बताना, वृद्धों के लिए पारिवारिक सुविधाओं की बात करना, बीती हुई प्रसन्नतापरक घटनाओं की कल्पनाओं में लीन रहना, शारीरिक देखभाल के बाल्यावस्था की भाँति दूसरों पर निर्भर रहना आदि अधिक प्रचलित हैं। जबकि, समायोजन के तार्किक विधियों के रूप में आयु की सीमाओं का अनुभव करना, शरीर की अच्छी तरह से देखभाल करना, अपने वस्त्रों एवं बनाव-श्रृंगार में पर ध्यान देना, नये मित्र बनाना, सामुदायिक एवं सामाजिक समस्याओं में रुचि दिखाना, पुराने जमाने की बातों को न दुहराना, आदि को लिया जा सकता है। (Bowman, 1954)

(7) Health Conditions (स्वास्थ्य दशाएँ)

जैसे-जैसे व्यक्ति मध्यावस्था से वृद्धावस्था की ओर आगे बढ़ता, स्वास्थ्य में प्रतिकूल प्रगति देखी जाती है। लम्बे समय तक अस्वस्थ रहने से भी व्यक्ति कुसमायोजन का शिकार

Date

Page No.

बनता है। अपने स्वास्थ्य के बारे में व्यक्ति का विचार भी समायोजन को प्रभावित करता है। जो लोग अपने स्वास्थ्य को अच्छा समझते हैं, उनका समायोजन अच्छा होता है (Kleemeier 1961)। वृद्धावस्था में व्यक्ति की दीर्घकालिक अस्वस्थता का सामाजिक आर्थिक स्तर पर प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा अस्वस्थता की अवधि में शारीरिक देखभाल की आवश्यकता, अस्वस्थता के प्रति पारिवारिक अभिवृत्ति, व्यक्ति का विगत जीवन में समायोजन, व्यक्तिगत वैयक्तिक एवं सामाजिक समायोजन का भी प्रभाव पड़ता है (Mack, 1953)

Living Conditions (रहन सहन की दशाएँ)

जब व्यक्ति को ऐसे स्थान पर रहने के लिए बाध्य किया जाता है, जो उसकी पसंद का नहीं होता है, तो वह अनुपयुक्त, हीन एवं अप्रसन्न - अनुभव करता है जिससे उसका समायोजन प्रभावित होता है। वृद्ध आश्रम में रहने वाले वृद्धों का समायोजन खराब तथा अपने घरों में रहने वालों का अच्छा होता है। इसी प्रकार जो वृद्ध व्यक्ति अपने विवाहित पुत्रों, संबंधियों या मित्रों के साथ रहते हैं, उनका समायोजन उन वृद्धों की तुलना में अपेक्षाकृत खराब पाया गया है, जो अपने घरों में रहते हैं। वृद्ध व्यक्ति जितने ही अधिक समय तक वृद्ध आश्रम, संबंधियों एवं मित्रों के साथ रहेगा, उसमें उतनी ही अधिक मात्रा में प्रतिकूल अभिवृत्ति का विकास होगा और उसी मात्रा में समायोजन कुप्रभावित होगा (Bennett and Nahemow. 1965, Lepkowski 1965)।

(9) Economic conditions (आर्थिक दशाएँ)

जिस व्यक्ति को धन की चिन्ता रहेगी; उसके लिए प्रसन्न रहना कठिन होगा। पहले अनुभव किये गए सुखों एवं प्रसन्नताओं का स्मरण करना वैयक्तिक अथवा सामाजिक जीवन में निश्चित रूप से बाधा उत्पन्न करता है। वृद्धों को आर्थिक समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है क्योंकि वे यह जानते हैं कि अपनी आय में वृद्धि करने का कोई अवसर उनके पास नहीं है। इसलिए आर्थिक समस्याएँ व्यक्ति के समायोजन को कुप्रभावित करती हैं। लेकिन सभी व्यक्तियों को वृद्धावस्था में आर्थिक संकटों का अनुभव नहीं करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में उनका समायोजन कुप्रभावित नहीं होता है।

Chitra